सुथरी वाणी

सुथरे शाह की एक ही वाणी,
स्वांस-स्वांस सिमरौ सुख मानी।

मेरी-मेरी क्या करे, झूठा सब संसार।
नाशवान सब वस्तु है, सुथरा कहे विचार।।

मन मोहन मन में बसें, मूरख ढूंढन जाय।
जिनका मन सुथरा हुआ, वो घट माहिं पाय।।

मोह ममता के जाल में, फंसा रहा अनजान।
सुथरा मन करके कभी, भजा नहीं भगवान।।

साधु भयो तो क्या हुआ, माला पहरी चार।
मन सुथरा कीन्हा नहीं, जिसमें भरे विकार।।

अक्ख फड़कनी ना मिले, मुख विच रहे गराह।
लख लानत भाई सुथरिया, जे दम दा करें वसाह।।

मन कपटी मन लालची, मन पापी मन चौड़।
सुथरा मन कीनै बिना, मिटे न मन की दौड़।।

बे परवाईयां तेरियां, प्रभु डाढा बेपरवाह।
भेद कोई ना पा सके, कह गये सुथरे शाह।।

धन दौलत का गर्व क्या, यह दो दिन की छांव।
सुथरे शाह हरि भजन कर, अमर रहेगा नांव।।

जिनकी सुरति भजन में, उनके कारज रास।
कण-कण में प्रभु दीखता, सुथरे शाह के पास।।

भई कृपा भगवान की, पाई मानुष देह।
सुथरे शाह भक्ति बिना, अन्त पड़े मुख खेह।।

जो चाहे कल्याण तुम, भजते रहो श्री राम।
सुथरे शाह बिन भजन के, झूठे सकले काम।।

सुथरे शाह हरिभजन कर, छोड़ सकल पाखण्ड।
भजन सहारे ही खड़ा, यह सारा ब्रह्माण्ड।।

सुथरे शाह सत्संग कर, सीख भजन की रीत।
फिर पछताये क्या बने, जब समय जायेगा बीत।।

सुख-दुःख भोग शरीर का, इसमें क्यों घबराये।
सुथरे शाह दोनों समय, रहो हरि लिव लाय।।

दाता के दरबार से पूरी राखो आस।
सुथरे शाह प्रभु कृपा बिन, मिटे ना मन की त्रास।।

मन का आपा खोय के, लीजे दर्शन पाय।
सुथरा मन कीन्हे बिना, जीवन व्यर्थ गंवाय।।

सन्त न काहू की कहें, कहें न अपनी बात।
सुथरे शाह हरि भजन में, मगन रहे दिन रात।।

कोई मरे कोई जीवे सुथरा घोल पतासे पीवै।
निष्काम भजन करे जो हरि का सो अमृत रस पीवै।।

सन्त संग कीन्हां नही - किया न हरि गुण गान।
सुथरे शाह हरि भजन बिन- तू चाहे कल्याण।।

सुथरा तन सेवा किए - सुथरा कर धन दान।
सुथरा मन कर भजन से - फिर क्यों न हो कल्याण।।

दान दिए धन न घटे - घटे न सरिता नीर।
सुख सम्पत्ति न घटे - कहें सुथरे शाह फकीर।।

सुत दारा सुख सम्पदा - मिले जाति सम्मान।
सुथरे शाह सब सुलभ है - दुर्लभ आत्मज्ञान।।

सुथरे शाह बिन गुरु कृपा मिले न आत्मज्ञान।
रहे भटकता जगत में चाहे कितना हो धनवान।।

सुथरे शाह हरि भक्त की - ये पहली पहचान।
आप अमानी रहे सदा - दे औरन को सम्मान।।

सुथरे शाह देह मानुष पाय के, कर लीजे दो काम।
टुकड़ा दीजे अन्न का - और जपो हरिनाम।।

सुथरे शाह इस देह का - मत करना अभिमान।
क्षमा दया मत छोड़ना - जो चाहो कल्याण।।

सुथरे शाह इस जगत में - था रावण विद्वान।
कहाँ गई धन सम्पदा रहा न एक निशान।।

सुथरे शाह हरिभजन बिन - विरले सकले काम।
गुरु कृपा हरिभजन से अमर हो गया नाम।।